

**Code No.: BFVDV-21**

Total No. of Questions : 5

Total No. of Printed Pages : 2

**स्नातकपरीक्षा: - २०१५**

**बि.ए. - विद्वन्मध्यमा - प्रथमवर्षम्**

**वेद: - वीरशैववेद:**

**भाग: - २, पत्रिका - ३**

**विषय: - पाणिनीयशिक्षा**

**दिनाङ्क: - 1-4-2015**

**गरिष्ठाङ्का: - १००**

**समय: - 10.00 A.M. to 1.00 P.M.**

**Max. Marks - 100**

**I. चतस्रः कारिकाः व्याख्या।**

**4 × 5 = 20**

१. उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वारास्त्रयः।  
ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमा अचि।।
२. ओभावश्च विवृतिश्च शषसा रेफ एव च।  
जिह्वामूलमुपध्मा च गतिरष्टविधोष्मणः।।
३. व्याघ्री यथा हरेत्पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।  
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद्वर्णान् प्रयोजयेत्।।
४. गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः।  
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः।।
५. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।  
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
६. अनुदात्तो हृदि ज्ञेयो मूर्धन्युदातः स्मृतः।  
स्वरितः कर्णमूलीयः सर्वास्ये प्रचयः स्मृतः।।

**II. “त्रिषष्टिश्चतुःषष्टिर्वा वर्णां शम्भुमते मताः” - विशदयत।**

**20**

**(अथवा)**

**पाणिनीयशिक्षानुसारं वर्णानां स्थानप्रयत्नादिकं विशदयत।**

**Code No.: BFVDV-21**

**III. द्वे अधिकृत्य लघुप्रबन्धं लिखत।**

**2 × 10 = 20**

१. कालानुसारी वर्णोच्चारणक्रमः।
२. स्वरतो वर्णतो वा अपराधस्य परिणामः।
३. पाणिनीयशिक्षाया अध्ययनस्य प्रयोजनम्।
४. नवपदशय्या।

**IV. चत्वारि ससन्दर्भं व्याख्यात।**

**4 × 5 = 20**

१. मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम्।
२. सम्यग्वर्णप्रयोगेण ब्रह्मालोके महीयते।
३. तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मालोके महीयते।
४. कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः।
५. सुस्वरेण सुवक्त्रेण प्रयुक्तं ब्रह्म राजते।
६. दीर्घस्वरं प्रयुञ्जीयात्पश्चन्नासिक्वमाचरेत्।

**V. चत्वारि अधिकृत्य लघुटिप्पणीमारचयत।**

**4 × 5 = 20**

१. षड्जादिसप्तस्वराणाम् उदात्तदिप्रभवत्वम्।
२. अयोगवाहाः।
३. जिह्वामूलम् उपध्मा च।
४. वर्णसमाम्नायः।
५. कस्य पाठे मोक्षो नास्ति?
६. पञ्चधा वर्णभेदः।